राजभवन में गोवा राज्य स्थापना दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में माननीय राज्यपाल श्री गुलाब चन्द कटारिया के संबोधन का प्रारूप

दिनांक : 30 मई 2024, गुरुवार	**समय : 4:00PM**	**स्थान : राजभवन, असम**

आज, असम राजभवन के आमंत्रण पर गोवा राज्य स्थापना दिवस के इस कार्यक्रम में पधारे

- अतिथिगण,
- सम्मानित महानुभावों,
- विभिन्न विभागों के अधिकारीगण
- उपस्थित देवियों और सज्जनों !

आज, असम राजभवन की ओर से, आप सभी का, हार्दिक स्वागत और अभिनंदन करते हुए मैं अत्यंत हर्ष का अनुभव कर रहा हूं।

आज, हम दूसरी बार राजभवन की ओर से गोवा का स्थापना दिवस मना रहे हैं।

मैं इस अवसर पर असम में रहने वाले गोवा के सभी लोगों को 'राज्य स्थापना दिवस' की बहुत-बहुत बधाई और शुभकामनाएं देता हूं।

भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने अपने महत्वाकांक्षी कार्यक्रम 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' के तहत सभी राजभवनों को देश के विभिन्न राज्यों के स्थापना दिवस मनाने के लिए कहा है। इस प्रकार के आयोजन भारत की विविधता को एकता के रूप में दर्शाते हैं, साथ में हम सब को एक परिवार के रूप में जोड़ने का कार्य करते हैं।

साथ ही, इस प्रकार के आयोजन राज्य की परंपरा, संगीत, कला और संस्कृति को प्रदर्शित करता है और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देता है। माननीय प्रधानमंत्री जी की पहल की वजह से आज हम एक-दूसरे से मिल रहे हैं और समझ रहे हैं।

बहनों और भाइयों,

आप जानते हैं कि गोवा अपने अद्वितीय समुद्र तटों, प्राकृतिक दृश्यों और सांस्कृतिक विविधता को संजोए हुए है। क्षेत्रफल में भारत का सबसे छोटा राज्य होने के बावजूद यह राज्य पर्यटकों के लिए बेहद आकर्षण का केंद्र है।

गोवा साहसिक जल खेलों और अपने जीवन्त त्योहारों के लिए भी प्रसिद्ध है। यह राज्य बहु धार्मिक संस्कृति को भी दर्शाता है। यहां का पारंपरिक संगीत, नृत्य और त्योहार, संस्कृति के बेहद महत्वपूर्ण पहलू हैं।

केन्द्र सरकार की मदद से, बीते कुछ वर्षों में, गोवा ने तेजी से प्रगति की है। जिसमें शिक्षा, स्वास्थ्य, विकास और बुनियादी ढांचे का विशेष स्थान है।

राज्य की असाधारण सुंदरता और शांति, जीवंत संस्कृति, लोगों का आतिथ्य, प्रचुर मात्रा में वनस्पति और जीव और समृद्ध जैव-विविधता राज्य में पर्यटन के विकास में योगदान दिया है। यही कारण है कि आज गोवा दुनिया में एक शीर्ष पर्यटन स्थल के रूप में प्रसिद्ध है।

मित्रों,

भारत का सबसे छोटा राज्य होने के बावजूद, गोवा की आजादी का इतिहास बहुत लम्बा है।

हम सभी जानते हैं कि देश तो गोवा से पहले ही आज़ाद हुआ था। देश के अधिकांश लोगों को अपने अधिकार मिल चुके थे। अब उनके पास अपने सपनों को जीने का समय था। उनके पास विकल्प था कि वो शासन सत्ता के लिए संघर्ष कर सकते थे, पद प्रतिष्ठा ले सकते थे। लेकिन कितने ही सेनानियों ने वो सब छोड़कर गोवा की आज़ादी के लिए संघर्ष और बलिदान का रास्ता चुना। गोवा के लोगों ने भी मुक्ति और स्वराज के लिए आंदोलनों को कभी थमने नहीं दिया। उन्होंने भारत के इतिहास में सबसे लम्बे समय तक आज़ादी की लौ को जलाकर रखा।

आप देखिए, लुईस दी मिनेझीस ब्रागांझा, त्रिस्ताव ब्रागांझा द कुन्हा, ज्युलिओ मिनेझीस जैसे नाम हों, पुरुषोत्तम काकोडकर, लक्ष्मीकान्त भेंबरे जैसे सेनानी हों, या फिर बाला राया मापारी जैसे युवाओं के बलिदान, हमारे कितने ही सेनानियों ने आज़ादी के बाद भी आंदोलन किए, पीड़ाएँ झेलीं, बलिदान दिया, लेकिन इस आंदोलन को रुकने नहीं दिया।

आज़ादी के ठीक पहले राममनोहर लोहिया जी से लेकर आज़ादी के बाद जनसंघ के कितने ही नेताओं तक, ये मुक्ति आंदोलन लगातार चला था।

याद कीजिए, मोहन रानाडे जी को, जिन्हें गोवा की मुक्ति के लिए आंदोलन करने पर जेल भेज दिया था। उन्हें सालों तक जेल में यातना झेलनी पड़ी। गोवा की आज़ादी के बाद भी उन्हें कई साल तक जेल में ही रहना पड़ा। तब रानाडे जी जैसे क्रांतिकारी के लिए अटल जी ने देश की संसद में आवाज़ उठाई थी।

आज़ाद गोमान्तक दल से जुड़े कितने ही नेताओं ने भी गोवा आंदोलन के लिए अपना सर्वस्व अर्पण किया था। प्रभाकर त्रिविक्रम वैद्य, विश्वनाथ लवांडे, जगन्नाथराव जोशी, नाना काजरेकर, सुधीर फडक़े, ऐसे कितने ही सेनानी थे जिन्होंने गोवा, दमन, दीव, दादरा और नगर हवेली की आज़ादी के लिए संघर्ष किया, इस आंदोलन को दिशा दी, ऊर्जा दी।

मित्रों,

गोवा मुक्ति विमोचन समिति के सत्याग्रह में 31 सत्याग्रहियों को अपने प्राण गँवाने पड़े थे।

आप सोचिए, इन बलिदानियों के बारे में, पंजाब के वीर करनैल सिंह बेनीपाल जैसे वीरों के बारे में, इनके भीतर एक छटपटाहट थी क्योंकि उस समय देश का एक हिस्सा तब भी पराधीन था, कुछ देशवासियों को तब भी आज़ादी नहीं मिली थी। और आज मैं इस अवसर पर ये भी कहूंगा कि अगर सरदार वलभ भाई पटेल, कुछ वर्ष और जीवित रहते, तो गोवा को अपनी मुक्ति के लिए इतना इंतजार नहीं करना पड़ता।

आखिरकार 30 मई 1987 को गोवा भारत का 25वां राज्य बना। शेष भारत के विपरीत, गोवा केवल 19 दिसंबर 1961 को पुर्तगाली शासन से स्वतंत्र हुआ। पुर्तगाली शासन से गोवा को मुक्त कराने में वहां के जिन-जिन नेताओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आज इस अवसर पर मैं उन्हें एक बार फिर से भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

मित्रों,

आज, गोवा की जनता और सरकार ने मिलकर अपने राज्य में बहुत प्रगति की है। गोवा द्वारा की गई प्रगति और राष्ट्र के लिए इसके विविध योगदानों के लिए मैं विशेष रूप से वहां की जनता और राज्य सरकार को धन्यवाद देता हूँ।

गोवा के लोग विशेषकर संगीत, साहित्य और कला क्षेत्र में बहुत दिलचस्पी रखते हैं, और इसी कारण गोवा ने देश को श्रेष्ठ गायक, साहित्यकार, कवि, डॉक्टर्स, वैज्ञानिक और अन्य पेशेवर दिये हैं।

गोवा ने देश को भारत रत्न लता मंगेशकर, आशा भोसले, डॉ आर ए माशेलकर, संगीतकार रेमो फर्नांडीस, कार्टूनिस्ट मारियो मिरांडा और कई अन्य प्रतिष्ठित व्यक्तित्व दिए हैं।

कई सर्वेक्षणों में गोवा, विकास के मानकों पर नंबर एक राज्य, के रूप में उभरा है।

गोवा राज्य स्थापना दिवस पर, राजभवन द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में आप सभी ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया है। इसके लिए मैं आप सबका हृदय से धन्यवाद देता हूं और आप सभी को अपने चुने हुए क्षेत्रों में सफलता की कामना करता हूं।

जय हिन्द !

जय भारत !